'झूम-झूम मृदु गरज-गरज घनघोर' शीर्षक कविता की समीक्षा

'झूम-झूम मृदु गरज-गरज घनघोर' शीर्षक कविता पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला प्रणीत बादल राग के अन्तर्गत एक अन्यतम रचना है। प्रस्तुत कविता में कवि ने बादल को शक्ति के आगार के रूप में चित्रित किया है, जो एक ओर अपने अंदर वज्र भी संभाल कर रखता है और दूसरी ओर रसाभाव में तड़पते और झुलसते हुए प्राणियों और वनस्पतियों को अमृत रस से सिंचित करने की क्षमता भी रखता है।

छायावाद चतुष्टय में निराला जी का नाम आदर के साथ लिया जाता है। छायावादी कवियों में निराला जी का दुर्धर्ष व्यक्तित्व सर्वाधिक पौरुषपूर्ण रहा है। पौरुषपूर्ण व्यक्ति निःसर्गतः विराट् और शक्तिशाली वस्तुओं तथा दृश्यों के प्रति आकृष्ट होता है। निराला ने अपनी मनोवृत्ति के अनुरूप प्रकृति के उन्हीं रूपों को काव्यात्मक वाणी दी है जिसमें उन्होंने शक्ति और ओज के दर्शन किए हैं। कविवर निराला के जीवन में शुष्क रूढ़ियों के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने जीर्णशीर्ण प्राचीन परम्पराओं को समाप्त कर नवीन विश्वासों को प्रतिष्ठापित करने के पक्षपाती थे। प्रकृति में बादल का व्यक्तित्व भी पौरुष से दीप्त ओजपूर्ण और क्रांतिकारी रूप में समक्ष आता है।

विवेच्य कविता में कवि बादल को घोर-घनघोर गर्जन के साथ पृथ्वी पर बरसने का आग्रह करता है जिससे प्रकृति के कण-कण में उसका गुरु गंभीर स्वर गूँजित हो जाय और लोगों का मन उत्साह से भर जाय। बादल के बरसने से पृथ्वी पर ताप से दग्ध हुए पेड़-पौधे लहलहा उठते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त संसार में अमृत की रसधारा बरस गयी है। इसलिए कवि ने बादल को वर्षा के रूप में संबोधित किया है। कवि बादल को घोर गर्जन के साथ बरसने का आग्रह किया है, क्योंकि बादल के बरसने से सम्पूर्ण पृथ्वी पर उथल-पुथल मच जाता है। इस पंक्ति में बादल के गरजने का एक भाव यह भी है कि शोषक वर्ग का हृदय भी इस गर्जन से भयभीत हो जाय।

APRIL 2014

M	T	W	T	F	S	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY 2014

M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

01 APRIL ▪ TUESDAY

कवि ने लिखा है कि बादल बरसने के बाद पृथ्वी पर दल-दल हो जाता है। नदियाँ मधुर स्वर में बहने लगती हैं और बहने के मार्ग में बाधाओं से संघर्ष करती हुई आगे की ओर बढ़ती जाती हैं। ये निरन्तर संघर्ष कर अग्रसर होती हुई नदियाँ मनुष्य को भी संघर्ष की प्रेरणा देती हैं।

इस कविता की एक अन्यतम विशेषता है, उसका नाद-सौंदर्य। इसमें चित्रात्मकता है और तदनुकूल ध्वनि व्यंजक पदों की बड़ी विलक्षण और मनोरम व्यंजना भी हुई है। उदाहरणार्थ ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

'धँसता दल-दल
हँसता है नद खल-खल
बहता कहता कुल-कुल-कल-कल।'

— :o: —